

Padesangreh

पद्यसङ्ग्रह



जोकि

अवध देशीय देहानी पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये
 श्री युत मुन्शी हनुमान प्रसाद साहिब डेप्यूटी इन्स्पेक्टर
 महारिस जिल्ला लखनऊ के इहति माम से रचा गया
 श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी
 श्री युत नवाब लेफिनेण्ट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

श्रीमद्दिवा सम्पन्न श्री साहिब डैरेकर बहादुर
 आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन पश्चिमोत्तरव अवध देशीयकी
 अनुमति से

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण यन्त्रालय में छपा ॥

मार्च

सन १८७८ ई०

6350

श्री गंगोत्तराय नमः

तुलसीदास जी की कविता

चौपाई

3138

सावधान कर मन पुनि शंकर । लागे कहन कथा अति सुंदर
 बार बार प्रभु चहत उठावा । प्रेम भगन तेहि उठत न भावा
 प्रभु पर पंकज कपि कर शीशा । सुगिरि सो दृष्टा भगन गौरीशा
 कपि उठाव प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा
 कह कपि रावण पालति लंका । केहि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका
 प्रभु प्रसन्न जाना हनु माना । बोले वचन विगत अभिमाना
 शारवा मृग कै बड़ि मन सार्द । शारवा ते शारवा पर जाई ॥
 नांघि सिंधु हाटक सुर जारा । निशिचर गण वधिविपिन उजारा
 सो सब तव प्रताप रघु सार्द ॥ नाथ न कछुक मोरि मन सार्द
 दोहा । ता कह प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम आनु कूल
 तव प्रताप बडवा नलहि जा रि सके खल तूल ॥

सुनत वचन प्रभु बहु सुख माना । मन क्रम वचन दास निज जाना
 मांगु वचन सुत वर अनुकूल । देउं आपाजु तुम कहं सुख मूल
 नाथ भक्ति तव सुख दायिनी । देहु कृपा करि शिव मन भवनी
 सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एव मस्तु तव कहें उठवानी ॥

उमा राम सुभाव जिन्ह जाना । ताहि भजन तजि भावन आना
 यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरण भक्ति तेदु पावा
 सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवंश । जय जय जय कृपाल सुख कंदा
 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कह। चलन कर करहु बनावा
 अब विलम्ब केहि कारण कीजै । तुरत कपिन कहं आयसु दीजै
 कौतुक देखि समन बहु वर्षे । नभते भवन चले सुर हर्षे ॥
 रोहा कपिपति बेग बोलायउ, आये यूथप यूथ
 नाना वरण अतुलबल वानर भालु बरूथ
 प्रभुपद पंकज नावहिं शीशा । गरजहिं भालु महाबल कीशा
 देखा राम सकल कपिसेना । चितव कृपा करि राजिवनयना
 राम कृपाबल पाय कपिंदा । भये पच्छ युत मनहुं गिरिंदा
 हरि राम तब कीन्ह पयाना । शकुन भये सुंदर सुख नाना
 जासु सकल मंगल मयनीती । तासु पयान शकुन यह नीती
 प्रभु पयान जाना बैदेही ॥ । फरके वाम अंग शुभ तेही
 जो जो शकुन जानकिहि होई । अशकुन भयउ रावणहि सोई
 चला कटक को बरनै पाग । गरजहिं वानर भालु अपारा
 नख आयुध गिरिपाद पधारी । चले गगन मह दृच्छा चारी
 केहरि नाद भालु कपि करहीं । डग मगाहि दिगज चिक्करहीं
 पंद चिक्करहिं दिगज डोल महि गिरि लोल सागर खर भरे
 मन हरय दिन कर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुखटरे
 वेग कटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटि नधावहीं

जय राम प्रबल प्रताप को शूल नाथ गुणगण गावहों
सक सहिन भार अपार अहि पति वार वार विमोहहों
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पीठ कठोर सोकिमि सोहहों
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥

जनु कमठ खप्पर सर्प राज सो लिखन आवि चल पावनी
दोहा यहि विधि जाय कृपानिधि उत्तरे सागर तीर ॥

जहं तहं लागे खान फल भालु बिपुल कपि वीर
उहां निशाचर रहैं सशंका ॥ जब ते जारि गयो कपि लंका ॥
निज निज गृह सब करैं विचारा ॥ नहिं निशिचर कुल केर उवारा
जासु दूत बल वरणिन जाई ॥ तेहि आये पुर कचन भलाई
अति सभित मुनि पुरजन बानी मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी ॥ बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरि सन परिहरू ॥ मोर कहा अति चित हित धरू
समुझत जासु दूत की करणी ॥ अबहिं गर्भ रज नीचर घरणी
तासु नारि निज सचिव बोलाई ॥ पठ वहु कंथ जो चहहु भलाई
तव कुल कमल विपिन दुख दई ॥ सीता शीत निशा सम आई
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें ॥ हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हें
दोहा राम बाण अहि गणारिस निकर निशाचर भेक

जब लगि ग्रासन तबहिं लगि यतन करहु तजि देक
अवण सुनत शठ ताकरि बानी ॥ विहंसा जगत विदित अभिमान
समय सुभाव नारि कर सांचा ॥ मंगल माहिं अमंगल राचा

जो आवै मर्कट कट काई ॥ । जिय हिं विचारे निशिचरखाई
 कंपहिं लोकप जाके चासा ॥ । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
 अस कहि विहंसि ताहिउरलाई। चलेउ सभा नमता अधिकाई
 मन्दोदरी हृदय कर चिंता ॥ । भयो कंथ परविधि विपरीता ॥
 बैठेउ सभा खबारि अस पाई। सिंधु पार सेना सब आई ॥
 बूभेसि सचिव उचित मत कहूँ। ते सब हंसे मौन करि रहूँ ॥
 जितेउ सरासुर तब अमुनाही। नर बानर केहि लेखे माहीं
 दोहा सचिव वैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आश
 राज धर्म तन सीम कर होदू बेग हीं नाश ॥

सोद रावण कहं बनी सहारई। अस्तुति करहिं सुनाय सुनारई
 अवसर जानि विभीषण आवा। आता चरण शीश तेहि नावा
 पुनि शिर नाय बैठिनि ज आसन। बोला वचन पाद अनुशामन
 जो रूपाल पूछेहु मोहिं वाता। मति अनुरूप कहव मैं ताता
 जो आपन चाहो कल्याना। सुपश सुमति शुभ गति सुख नाना
 तौ पर नारि लिलार गोशंद। तजौ चौथ चंदा की नारई ॥
 चौदह भवन एक पति होई। भूत द्रोह तिथै नहिं कोई ॥
 गुण सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ
 दोहा काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पंथ ॥

सब परि हरि रघुवीर पद भजहु कहहिं सदगुंथ
 तात राम नहिं नर भूषाला। भुवनेश्वर कालहु के काला
 ब्रह्म अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता

गोहिज धेनु देव हित करी । कृपा सिधु मानुष तनु धारी
 जन रंजन भंजन खल भ्राता । वेद धर्म रक्षक सुर चाता ॥
 ताहि बैर तजि नादय नाथा । प्रणता रति भंजन रघुनाथा
 देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही ॥ भजहु राम बिनु काम सनेही
 शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा । विष्णु श्रोह कृत अघ जेहिलागा
 जासु नाम त्रय ताप नशावन । सोद प्रभु प्रगट समुझ जियगवन

होहा वार वार पद लागैं दिनय करैं दृश प्रीति ॥
 परि हरि मान मोह मद भजहु कोशला धीश
 मुनि पुलस्त्य निज शिष्य तन कहि पठई पदवात
 तुरत सो मैं तुम सन कही पाय सु अवसर तात

माल वंत अति सचिव सयाना । तासु वचन मुनि अति सुख माना
 तात अनुज तव नीति विमूषण । सो उर धरहु जो कहत विभीषण
 रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ ॥ दूरि न करहु इहांते कोऊ ॥
 माल वंत गढ़ गयउ बहोरी । कहेउ विभीषण पुनिकर जोरी
 सुमति कुमति सब के उर रहई । नाथ पुणरा निगम अस कहई
 जहां सुमति तहं संपति नाना । जहां कुमति तहं विपति निदाना
 तव उर कुमति बसी विपरीती । हित अनहित जानत रिपु प्रीती
 काल रात्रि निशि चर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

होहा तात चरण गहि मांगउ राखहु मोर दुलार
 सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार
 बुध पुणरा श्रुति समस्त बानी । कही विभीषण नीति बरवानी

सुनत दशानन उठा रिसाई । खल तोहि मृत्युनिकट चलि आई
 जिअसि सदा शठ मोर जिआवा । रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा
 कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल तेहि जीते हम नाहीं ।
 मम पुर बसित पसिन सन प्रीती । शठ मिलु जाहि ताहि कहू नीती
 अस कहि कीन्हे सि चरण प्रहारा । अनुज गहे पद बारहि बारा ॥
 उमा संत कै यहे बड़ाई ॥ । मंद करत जो करै भलाई ॥
 तुम पितु सरिस भलेहि मोहि मास । राम भजे हित होइ तुम्हारा ॥
 सचिव संग लै नभ पथ गयउ । सबहि सुनाय कहत अस भयउ
 दोहा राम सत्य संकल्प प्रभु सभा फाल वश तोरि ॥

मैं रघुनायक शरणा अब जाउं देखू जनि खोरि
 अस कहि चला विभीषण जबही । आयु हीन भेनि शि चरत बही
 साधु अवस्था तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल करहानी
 रावण जबहि विभीषण त्यागा । भयो विभव विनु तवहि अभागा
 चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं
 देखि हों जाइ चरण जल जाता । अरुण मृदुल सेवक सुख दाता
 जे पद परसि तरी ऋषि नारी । हंडक कानन पावन कारी ॥
 जे पद जनक सुता उर लाये । कपट कुंरा संग धरि धाये ।
 हर हर सर सरोज पद जोई । अहो भाग्य मैं देख बसोई
 दोहा जिन पायन कर पादुका भरथ रहे मनु लाय ॥

ते पद आजु विलोकि हों दून नयनन अब जाय
 दहि विधि करत सप्रेम विचार । आयउ सपदि सिधु के पाग

कपिन विभीषण आवत देखा। जाने उ कोउ रिपु दूत विरोधा
 नाहि राखि कपि पति पहं आये। समाचार सब जाइ सुनाये।
 कह सुग्रीव सुनिय रघुराई। आवा मिलन दृशानन भाई
 कह प्रभु सरवा बूमिये काहा। कह कपीश सुनहु नरनाहा
 जानि न जाइ निशाचर माया। काम रूप केहि कारण आया
 भेद हमार लेन अठ आवा। राखिय बांधि मोहिं अस भावा
 सरवा नीति तुमनी कि विचारी। मम प्रण शरणा मत भयहारी
 सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना। शरणागत वत्सल भगवाना
 दोहा शरणागत कहं जो तजै निज अनहित अनुमानि

ते नर पाप पाप मय तिनहिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्र बध लागहि जाहू। आये शरण तजौ नहिं ताहू॥
 सन्मुख होइ जीव मम जब ही। जन्म कोटि अघ नाशौ तब हीं
 पाप वंत कर सहज सुभाई॥ भजन मोर तेहि भावन काउ,
 जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोर सन्मुख आव कि सोई
 निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छुटन भावा
 भेद लेन पठवा दृश शीशा। तबहुन भय कहु हानि कपीशा
 जग महं सरवानिशाचर जेत। लक्ष्मण हनहिं निमित्त महं ते
 जो समीत आवा शरणार्थ। राखि हों ताहि प्राण की नाई
 दोहा उभय भांति लै आवहु हंसि कह कृपानिधान
 जय कृपाल कहि कपि चले अंगदादि हनुमान

चतुरार्द्र के विषय में दृष्टान्त

होहा भाव सरस समुझत सबै भले लगे यह भाय
 जैसे अब सर की कही बानी सुनत सोहाय ॥
 नीकी पै फीकी लगे बिन अब सर की बात ॥
 जैसे वरणात युद्ध में रससिंगार न स्वहात ॥
 फीकी पै नीकी लगे कहिये समय विचारि ॥ ॥
 सब के मन हरित करै ज्यों विवाह में गारि ॥
 जाही ते कछु पादये करिये ताकी आस ॥ ॥
 रीते सरवर पै गये कैसे बुझत पियास ॥ ॥
 स्वाति बूंद है सधन में चातक मरत पियास
 जो जाही को है रहे सो तेहि पूरे आस ॥
 भले बुरे सब एक से जब लगा बोलत नाहिं
 जानि परत है काक पिक ऋतु बसंत के माहिं
 मधुर वचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान
 तनक सीत जल से मिटै जैसे दूध उफान ॥
 सबै सहायक सबल के कोढ़ न निबल सहाय
 पवन जगावत आग को दीपहि देत बुझाय ॥
 कछु बसाय नहिं सबल सों करै निबल सों जोर
 चलै न अचल उरवार तर डारत पवन भूकोर
 जो जाही सों रचि रघो तिहि ताही सों काम
 जैसे किरवा नीम को कहा आम सों काम ॥

प्रकृति मिलै मन मिलत है अन मिलते न मिलाय
 दूध दही ते जमत है कांजी ते फटि जाय ॥ ॥
 पर घर कबहु न जाइये गये घरत है जोति
 रवि मण्डल में जात शशि क्षीण कलाद्युति होति
 ब्रह्म बनाये बन रहे ते फिर और बनेन ॥
 कान कहत नहिं बैन जो जीभ सुनत नहिं बैन
 मूरख गुण समुझै नहीं तौन गुणी में चूक
 कहा भयो दिन के विभव देखै जो न उलूक ॥ ॥
 मूढ़ तहाहीं मानिये जहां न पंडित होय ॥ ॥
 दीपक को रवि के उदय बात न पूछै कोय ॥
 निपट अबुध समुझै कहा बुधजन वचन बिलास
 कबहुं भेक न जानही अमल कमल की बास ॥
 सांच मूढ़ निर्णय करै नीति निपुण जो होय ॥
 राज हंस बिन को करै क्षीर नीर को द्योय ॥
 दोष हि कोउ न है गहै गुण न गहै खल लोक
 पिये रुधिर पय नापियै लगी पयोधर जोक ॥
 कारज धीरे होत है काहे होत अधीर ॥ ॥
 समय पाय तर वर फरै केतिक सींचो नीर ॥
 क्यों कीजै ऐसे यतन जाते काज न होय ॥
 परबत पै खोदे कुवां कैसे निकसै नोय ॥
 जो चाहै सोई करै बड़े असंकित अंग ॥

सब के देखत नगन हर धरत गौरि अरधंग
 बड़े सहज ही दात सों रीझि देत बक सीस॥
 तुलसी दल ते विलु जो आक धतूरे दृशा॥
 सुधरी विगारे बेगानी विगारी फिरि सुधरेन॥
 दूध फटे कांजी परे सो फिरि दूध बनेन ॥ ॥
 छोटे नरते रहत है शोभा युत शिर ताज॥
 निरसल राखे चांदनी जैसे पायं राज ॥
 सहज रखीलो होय जो करै अहित पर हेत
 जैसे पीड़ित कीजिये ऊख तऊ रस देत॥
 कबहुं कुसंग न कीजिये किये प्रकृति की हानि
 गूंगे को समुभाय वो गूंगे की गति आनि।
 कहा करै कोऊ यतन प्रकृति और की और
 विष मारे ज्यावे सुधा उपजे एकहि ठौर ॥
 दूरे न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान ॥
 भवर न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान ॥
 धन बाढ़ि मन बढ़ गयो नाहिन मन घट होय
 ज्यों जल संग बाढ़ि जल जल घट घटैन सोय
 सब ते लघु है मांगियो यामें फेर न सार ॥
 बलि पै यांचत ही भये वाचन कर करतार
 सबै एक से होत नहिं होत सबन में फेर॥
 कपरा खादी चाफतौ लोह तवा शम घोर।

जैसे की सेवा करें तैसी आशा पूर ॥ ॥
 रत्ना कर सेवै रतन सर सेवै साल्मूर ॥ ॥
 होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसङ्ग केथान
 गंधी और लोहार की बँडहु देरवु दुकान ॥
 और छुटे ते मीत हू है अमीत सत रात ॥
 रवि जल उधरे कमल को जारत गारत जात
 जात गुनी जातन तहां आडम्बर युत सोय
 पहुंचे चडू आकाश लों जो गुन संयुत होय
 गुन वारे सम्पति लहै लहै न गुन बिन कोय
 काढ़ै नीर पताल ते जो गुन युत घट होय
 और छोटे गुनिये नहीं जाते होत बिगार
 तृण समूह को छिनक में जारत तनक अंगार
 पंडित जन को अम मरम जानत जे मतिधीर
 कबहुं बांझ न जानहीं तन प्रसूत की पीर
 वीर पराक्रम ना करें तासों डरत न कोय
 बालकहुं को चित्र के बाध खिलौना होय
 नृप प्रताप ते देश में रहै दुष्ट नहिं कोय ॥
 प्रगटे तेज दिनेश को तहां निमिर नहिं होय
 कारज ताही को सँरै करें जो समय निहार
 कबहुं न हारै खेल जो खेलै सांव विचार
 कोउ दूर न करि सकै उलटे विधि के अंक

उदधि पिता तउ चंद्र को धोयन सक्यो कलंक
 गांइक सबै सपूत के सारै काम सपूत ॥
 सब को डंपन होत है जैसे बन को सत ॥
 करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान
 रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान
 को सुख को दुख दैत है दैत कर्म भक मोर
 उरमै सुरमै आप ही ध्वजा पवन के जोर
 भली करत लागै बिलंब बिलंब न बुरे विचार
 भवन बनावत दिन लागै ढाहत लगै न वार
 सोई आपनो आपनो होत निरंतर साथ ॥
 होत परायो आपनो शस्त्र पराये हाथ ॥
 कह रस में क्यों रोस में अरि से जनि पतियाय
 जैसे शीतल नव जल डारत अग्नि बुझाय
 अंतर अंगुरी चारि को सांच भूँठ में होय ॥
 सब मानै देखी कही सुनी न मानै कोय ॥
 होय भले के सुत बुरे भलो बुरे के होय ॥
 दीपक सों काजल प्रगट कमल कीच में होय
 होय भले चाकरन ते भले धनी को काम
 ज्यों अंगद हनुमान ते सीता पार्द राम
 सुख सज्जन के मिलन को दुख जन मिले जनाय
 जानै ऊख मिठास को जब मुरख नीब चबाय

जाहि मिले सुख होत है तेहि चिहुरे दुख होय ॥
 सूर्य उदय फूलै कमल ता बिन सकुचै सोय ॥
 झूठे हू करिये यतन कारज बिगारे नाहि ॥
 कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फिजिजाहि
 कारज सोइ सुधारि है जो करिये सम भाय ॥
 अति बरसे बरसे बिना ज्यों करसन् कुंभिलाय ।
 रहै प्रजा धन यत्न सो तहं बांकी तरवारि ॥
 सो फल कोउ न लै सके जहां कदीली डारि ।
 पंडित अरु वनिता लता शोभित आश्रम पाय
 है मानिक बहु मोल को हेम जडित छवि छाय
 अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय ॥
 चेश्या बरख घटा वही योगी बरख बढ़ाय ॥
 कहूं कहूं गुन होय ते उपजन दुख शरीर ॥
 मधुरी बानी बोलि के परत पींजरे कीर ॥ ॥
 भले बुरे निबहैं सबै महत पुरुष के संग ॥ ॥
 चन्द्र सर्प जल अग्रिये बसत शंभु के अंग ॥
 बिना कहेहु सत पुरुष वर को पूरै आश ॥
 कौन कहत है सूर्य को घर घर करत प्रकाश
 कछु कहि नीच न छोड़िये भलो न बाको संग
 पाथर डारे कीच में उछलि विगारै अंग ॥
 मोठी खादी वस्तु नहिं मोठी जाकी चाह ॥

अंबिली मिसरी छाड़ि कै आपै खात सराह ॥
 खाय न खरै शुद्ध मन चोर सकल ले जाय ॥
 पीछे ज्यों मधु मक्षिका हाथ मलै पछिताय ॥
 उत्तम विद्या लीजिये जो पै नीच पै होय ॥
 परे अपावन दौर में कांचन तजत न कोय ।
 जानि बूझि अजु गुति करै तासों कहा बसाय
 जागत ही सोवत रहै ताको कहा जगाय ॥
 सजन बचावै कष्ट ते रहै निरंतर साथ ॥
 नैन सहार्द ज्यों पलक देह सहार्द हाथ ॥
 अरि के कर में दीजिये औसर को अधिकार
 ज्यों ज्यों ब्रह्म लुटावै हे त्यों त्यों यश विस्तार
 बुद्धिवान गंभीर को संगत लागत नाहिं ॥
 ज्यों चंदन दिग अहि रहत विय न होय तेहि माहिं
 सज्जन को दुरव दू दिये दुरजन पूरे आस ॥
 जैसे चंदन को घिसे सुंदर दंत सुवास ॥
 सज्जन चित कबहुं न धरत दुरजन जन के बोल
 पाहन मारै आप को तउ फल देत अमोल
 विरले नर पंडित गुनी विरले बूझन हार ।
 दुख खंडन विरले पुरुष जे उत्तम संसार ॥
 जे करतार बड़े किये मग पग धरत विचार
 दुर्जन हूं सो मिलि चलैं बोलैं रोस निवार ।

जाहि वड़ाई चाहिये तजै न उन्नम साथ ॥ ॥
 ज्यों पलास संग पान के पहुँचै राजा हाथ ॥
 वचन पारखी होहि तू पहिले आपन भाय ॥
 अन पूछे नहिं भाविये यही सीख जिय राख ॥
 मुखरु अवरा दगा नासिका सब ही के एक ठौर
 कहवो सुनिबो देखवो चतुरन को कछु और
 एक कामिनि अरु कवि वचन होउ रस को ठौर
 बेधक को मन बेधव वे कामिनि कवि और ॥
 जो तू चाहै अधिक रस सीख ऊख की लेय ॥
 जो तोसों अनरस करै ताहि अधिक रस देय ॥
 नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय ॥
 ज्यों ज्यों नीचे ह्वै चले त्यों त्यों ऊँचो होय ॥
 कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर ॥
 जैसे बस सागर बिये करत मगर सों वैर ॥
 आपनी पहुँच विचारिकै करतव करिये दौर ॥
 ते ते पाँव पसारिये जेती लंबी सौर ॥ ॥
 पिसुन छल्यो नर सुजन सो करत विश्वासनचूक
 जैसे चाशो दूध को पीवत छाँछहि फूंक ॥
 फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजै व्योपार ॥
 जैसे हाँडी काठ की चढ़ै न सूजी वार ॥ ॥
 करिये मुख को होत दुरव यह कह कौन सयान ॥

वा सोने को जारिये जासों फाटे कान ॥ ॥
 भले बुरे जहं एक से तहां न बसिये जाय ॥
 ज्यों अन्याय पुर में बिके खर गुड़ एकै भाय ॥
 भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव ॥
 जो माने तो देव है नहीं भीत को लेव ॥ ॥
 अति अनीति लहिये न धन जो प्यारे मन होय ॥
 पाये सोने की चुरी पैद न मारै कोय ॥ ॥ ॥
 मूरख को पोथी दर्द बांचन का गुण गाथ ॥
 जैसे निरमल आसी दर्द आंधरे हाथ ॥ ॥
 अति हठ मत कर हठ बढ़ै बात न करिये कोय
 ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय
 लालच हू ऐसो भलो जासों पूजे आस ॥ ॥
 चादत हूं कहुं आस के बुझत काहु की प्यास
 जैसे गुण दीन्हों दर्द तैसे रूप निबंध ॥ ॥
 ये दोऊ कहुं पादये सोने और सुगंध ॥ ॥
 प्रेम निवाहन कठिन है समुझ कीजियो कोय
 भंग भरवन है सुगम पै लहर कठिन ही होय
 एक वस्तु गुण होत है भिन्न प्रकृति के भाय ॥
 भटा एक कोपित करै करत एक को बाय ॥
 बिन स्वारथ कैसे सहे कोऊ करुवे बैन ॥
 लात खाय चुप कारिये जो होय दुधारुधेन ॥

करे बुराई सुख लहै कैसे पावे कोय ॥ ॥
 रोपे पेड़ बबूल को आंव कहां ते होय ॥
 होय बुराई ते बुरे यह कैसे निरधार ॥
 खात खनै गो और को ताको कृप तयार ॥
 एक भेष के आसरे जौति वरणा छिपिजात
 ज्यों हाथी के पांव में सब को पांव समात ॥
 कन कन जौरे मन जुरे खाते निरखे सोय ॥
 बूंद बूंद सों घट भरे टपकत बीते तोय ॥
 अम हीं सों सब मिलत है विन अम मिलै न काहि
 सीधी अंगुरी घी जम्यो कबहुं निकरत नाहिं
 होत न कारज मो बिना यहै कहै सो अग्रयान
 जहां न कुक्कुट शब्द तहं होत न कहूं बिहान
 यही बात सब ही कहै राजा करै सो न्याव ॥
 ज्यों चौपरि के खेल में पांसो परै सो हांव ॥
 पर को औ गुण देखिये अपनी दखि न होय
 करै उजरो दीप पै तरे अंधेरो जोय ॥ ॥
 अपनी अपनी ठौर पर सब को लागे दाव
 जल में गाड़ी नाव पर चल गाड़ी पर नाव
 सुख देखाय दुख दीजिये खल सों लखिये काहि
 जो गुरु दीन्हे ही मरत क्यों विष दीजे ताहि
 अन पूछे ही जानिये मूढ़ देखि मन माहिं ॥

छल के ओछे नीर घट पूरे छल के नाहिं ॥
 विन शतवार न लावा ही ओछे जन की प्रीति
 अम्बर डम्बर सांभ के ज्यों बारू की भीति
 गुल समूत जान्यो परे खल सब लक्षण गात
 होन हार विरवान के होत चीकने पात ॥
 जो धनवत सुदेय कछु देय कहा धन हीन
 कहा निचोरे नम्र जल न्हाय सरोवर दीन ॥
 होत निवाहन आपनो लीन्हे फिरे समाज
 चूहा बिल न समात है पूंछ बांधिये राज
 बिना प्रयोजन भूलि हू ठढिये नाहीं टाट ॥
 जानो नहिं जा नगर को ताकी पूंछन बाट
 दंगित ओ आकार ते जान लेत जो भेंट
 तासों बात दुरै नहीं ज्यों दार्द सों पेट ॥
 आप कहै नाहिन करै दाता को है हेत ॥
 आप न जावै आसरे और न को सिख देत
 जो करिये सो कीजिये पहिले कर निरधार
 पानी पी घर पूंछनो नाहक भलो विचार
 पाछे कारज कीजिये पहिले यत्न विचार
 बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहिले पार।
 ठीक किये विन और की बात सांचत अर्थ
 हाथ अंधेरी रैन में परी जेबरी सर्प ॥

भूँठ बिना फीकी लगे अधिक भूँठ दुख भौन
 भूँठ तितोही चोलिये ज्यों आटे में लोन ॥
 दोर देख के हूजिये कुटिल सरल गति आप
 बाहर देदो फिरत है बाँदी सूधो सांप ॥ ॥
 होऊ चाहें मिलन को तो मिलाप निरधारि
 कबहुं नाहिन बाजि है एक हाथ ते तारि ॥
 आपे कारण आपनो करत कुसंगति थाप ॥
 पाय कुल्लारी देत है मूरख अपने हाथ ॥
 नाही को करिये यत्न रहिये जाकी आर ॥
 कौन बैठ के डार पर काटै सोई डार ॥ ॥
 पर तछनी के देखिये कह वरने कोउ ताहि
 कर कंकन की आरसी को देखत है चाहि
 आये आहरना करै जात रहै पछिताय ॥
 आयो नाग न पूजिये बाँबी पूजन जाय ॥
 निबल सबल के पक्ष ते सबलन सों अनखात
 देत हिमायत की गधी एग की के लात ॥
 बहुत ब्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय
 कांसे ऊपर बीजली परत कहै सब कोय ॥
 ओछे नर के पेट में रहै न मोदी बात ॥
 आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात ॥ ॥
 तर से दू पर से नहीं नौढ़ा रहत उदास ॥ ॥

जो सर सुरवा भार में किसी उन्हाले आस ॥
 हिलत मिलत चितवन मिटी वय बीते करवत
 योगी घा सो उठ गया आसन रही अभूत ॥
 मिलन चले आये बहुरि तउन रही नित्य चित्त ॥
 कांधे डारी कामरी योगी काके मित ॥ ॥
 तजि कै सुंदर चतुर पिय विरभे अनत बसाय
 कूकर चौक चडादये चाकी चाट न जाय ॥
 निररिब घात मौती सबै रहीं प्रीति हित हार
 लेय परोसिन भोपरी नित उठि करती रार
 वय रति गति मति चाह बिन पिय रिभवन की बस
 धोबी बेटा चांदसा सीपी और पटाक ॥ ॥
 रुख्यो पिय सौतिन निल्यो सरिबहि रविजत कर भान
 नाव सचलति कुम्हार को खर के मेटति कान
 पिय चितवन पठई सरवी रही बैठ सुख लेय ॥
 चारो कुनिया मिल गर्द पहरो काको देय ॥ ॥
 सब सुखन्द पिय हित करे तउन रहनिय नीति
 भुस ऊपर को लीपनो अरु बालू की भीति ॥
 पिय औरै चितवन चलन घर नित्य सो नहिं लेस
 जैसे कंधा घर रहे तैसे गये विदेश ॥ ॥
 वय बीते आये रमन अब न लहत चित चाय ॥
 बीत्यो घ्याह कुम्हार को भांडा लैलै जाय ॥

सोरठा पतरी लै घर आव आगि वारिहे गोदले ॥
 करन पात पहि राव कृष्ण कहो वारी नहों ॥
 अपने अपने कर थपै लिरि पूजत तिय भोति
 सुफल होय मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीति ॥
 तुलसी जहां विवेक नहिं नहं न कीजे बास।
 स्वेत स्वेत सब एक से करर कपूर कपास ॥
 राम नाम आराधवो तुलसी दया न जाय ॥
 लरकारि को पैर बो आगे होत सहाय ॥
 जिमि पनिहारी जेवरी खैंचत कदै परखान ॥
 तुलसी रसना राम कहू पाय केतिक अनुमान।
 तुलसी रसना तौ भली जो तू सुमिरै राम ॥
 नाहित काढ़ि निकासिये मुरदमें भलो न चाम
 तुलसी बिलंब न कीजिये भजि लीजे रघुबीर
 तन तरकस ने जात है स्वास सारि खेतीर
 एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय ॥
 जो गहि सैंवै मूल को फूलै फलै अघाय ॥
 स्वारथ सीता राम हैं परमारथ सिय राम ॥
 तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा है काम ॥ ॥
 स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एक ही ओर
 द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
 तुलसी सोई चतुरता राम चरण लव लीन

परधन परमन हरन को वेष्या बड़ी प्रवीन
 चतुर्दक्ष चूल्हे परै शानी यम के घाव ॥
 तुलसी हर सों प्रेम नहिं सो जर मूल न साव ॥
 तुलसी जो पै राम सों नाहीं सहज सनेह ॥
 मूढ़ मुढ़ायो सो वृथा भांड भये तजि गेह ॥
 मूढ़ उधारन किन कष्टो वस्त्र रहे प्रिय लोग
 घरही सती कहावती जरती नाहिं वियोग ॥
 यथा लाभ संतोष सुख प्रभु पर चरण सनेह
 तुलसी जो मन हाथ है जस कानन तस गेह
 तुलसी खोदे दास को रघुपति गरवत मान ॥
 ज्यों मूरख उपरोहि तहि देत दान यजमान
 गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भरि पूर ॥
 तुलसी चातक के मते बिन खाती सब धूर ॥
 गुण स्वरूप बल द्रव्य को प्रीति करै सब कोय
 तुलसी प्रीति सगहिये जो दून ते बाहर होय
 मीन काटि जल धोदये खाये अधिक पियास
 तुलसी प्रीति सगहिये मुये मीन की आस
 प्रभुता को सब कोउ चहै प्रभु को चहै न कोय
 जो तुलसी प्रभु को चहै तुरतै प्रभुता होय ॥
 तुलसी घर के घर में घरी घरी तन छीन ॥
 कबहुं नाव न दन फिर कर कर याको पीन ॥

काम क्रोध मद लोभ की जब लग मनमें खान
 तब लग पंडित भूर्व हू तुलसी एक समान
 स्वामी को मेवक घने सेवक को प्रभु एक ॥
 तुलसी यामें सो बड़ो जाके मनमें देक ॥ ॥
 तुलसी मन को मुकुर है लखै सुलखान कोय
 जैसे जाको भाव है तैसे ताको होय ॥ ॥
 होत भले के अन भलो होत दानि के सूस
 होत कपूत सपूत के ज्यों पावक मह धूम ॥
 नीच निचाई ना तजे साधन हूं के संग ॥
 तुलसी चंदन विटप बस विन विष भौन भुवंग
 आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति क्षान दृढ़ होय
 तुलसी बिना उपासना विन दूल्हा की जोय
 आवत ही हर्ष नहीं नयनन नहीं सनेह ॥
 तुलसी नहां न जादये कंचन वर्य मेह ॥
 हरषि उदै आदर करै आवत जान अतीत
 तुलसी तब ही जानिये परमेश्वर सो प्रीति
 तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग
 हिलिये मिलिये प्रेम सो नदी नाव संयोग
 तुलसी कहत पुकारि कै सुनौ सकल देकान
 हेम दान गज दान ते बड़ो दान सन मान ॥
 परमुख संपति देखि सुनि जरहिं ते जड़ विन आग

तुलसी तिन के भागते चले भलाई भाग
 तुलसी कबहुं न त्यागिये अपने कुल की रीति
 लायक हूं तो कीजिये व्याह बैर ओ प्रीति
 तुलसी निज कीरति चहै पर कीरति को खोय
 तिन के मुख मसि लागिये मिटै न मरिहै धोय
 तुलसी या संसार में पंच रत्न हैं सार ॥
 साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार
 बैर सनेह सयान को तुलसी जो नहिं जान ॥
 सो किमि प्रेम मग पग धरै पशुविन पूछ बखान
 यह संसार मन मोहना मन मोहै दिन रात ॥
 बिना भक्तिजे रहत हैं जन्म अकारय जात
 धन योवन को गर्वयो कबहुं करिये नाहिं
 देवत ही मिटि जात है ज्यों बादर की छाहिं
 जान बूझ अज गुति करै तासों कहा बसाय
 जागत ही सो बत रहै तेहि को सकै जगाय
 या संसार में आय के छांड़ि देय तू सेठ
 लेना है सो लेदले उठी जात है पैठ ॥
 सांच बरो वर तप नहीं झूठ बरो वर पाप
 जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप ॥
 सांचे आप न लगार्द सांचे काल नखाय ॥
 सांचे को सांचा मिले सांचे याहिं समाय ॥

मत्स्य वचन मुख जो कहत ताकी चाह सराह
 गाहक आवत दूर ते एक शब्द की चाह।
 जग में प्रसीति बढादये रहिये सांचे होय ॥
 मूढ़ नर की सांचिये साखि न माने कोय ॥
 कहते हैं करते नहीं सो तो बड़े लवार ॥
 आरिबर धके खायेगे ईश्वर के दरवार ॥
 कलह करै सो आज ही आज करै सो भव
 पल में परलय होयगी बहुरि करौगे कव
 मुख में सज्जन बहुत हैं दुख में लीन्हें छीन
 सोना सज्जन कसन को विपति कसौटी कीन
 दुख में सुमिरन सब करै मुख में करै न कोय।
 मुख में जो सुमिरन करै तो दुख कोह को होय
 मेरा मुझ को कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
 तेरा तुझ को सौंपता क्या लागै है मोर ॥
 पांव पै लगी सुध नहीं करै काल को साज ॥
 काल अचानक मारि है ज्यों तीतर को बाज
 माली आवत देखि कै कलियां कली पुकार ॥
 फूली फूली चुनि लई काल्हि हमारी बार ॥
 काचा काया मन अधिर धिर धिर काम कंत
 ज्यों ज्यों नर निधरक फिरै त्यों त्यों काल हसंत
 आस पास योधा खड़े सबै बजाये गाल ॥

बीच महल तेलै चले ऐसा बरबस काल ॥
 माटी कहै कुम्हार सों क्या रूंधै तू मोहिं ॥
 एक दिन ऐसा होयगा मैं रूंधोंगी तोहिं ॥

प्रश्नोत्तर

देवो यश को मूल है याते देवो ठीक ॥ ॥
 पर देवे में जानि लो दुख कबहुं नहिं नीक
 संचय करिबो है भलो सो आवै बहु काम ॥
 पाप न संचय कीजिये जो अपयश को धाम
 जइ कबहुं नहिं कारिये काहु की मन धारि
 पाप रु ऋण की जर कटी भलो एक निरधारि
 भलो होत नहिं मारिबो काहु को जग माहिं ॥
 भलो मारिबो क्रोध को तासम नर रिपु नाहिं
 जोरी करि नहिं रेकिये काहु को मन मीत
 बनें तो मन को रेकिये याते होय बिनीन ॥
 संग सदा सुख दान है करिये सज्जन देख
 कबहुं न करिये दुष्ट को संग यही अवरेख
 करै हिरस जो काहु की तामो लह नर हान
 पर विद्या की हिरस वर जासों हो जग मान ॥
 प्रीति रीति दुख मूल है मैं कीन्हों निरधार ॥
 प्रीति भली भगवान की याते हो भव पार
 भलो न जग में त्रास कोउ त्रास दुख को मूल ॥

पर गुरु पितु के वास ते मिटै दुःख को मूल ॥ ॥
 बुरे मांगिबो जगत में याते हो अपमान ॥
 क्षमा मांगिबो दूराते भले एक करि ज्ञान ॥
 प्रातहि उठि कै नित्य तू करिये प्रभु को ध्यान
 जाते जग में होय सुख अरु उपजै सत ज्ञान
 काहते कहुँओ वचन कहौ न कबहुँ जान
 तुरत मनुज के हृदय में छेदत है जिमि बान ॥
 पढ़िबो में कबहुँ नहीं नागा करिये चूक ॥ ॥
 कुपह लोग मांगत फिरैं सहहि निरादर भूक
 कबहुँ न चोरी कीजिये यद्यपि मिल बहु वित्त
 नर कंसि ताके फंद में पावत दुःख अमित ॥
 मीठी बोली बोलिये करिये सब सों प्रीति ॥
 करै प्रेम नासों सकल लखि शुक् साखि गीति
 यद्यपि होतु पितु मातु को सब सुतपै सम नेह
 लखि सपूत ठंडक लहै जरत कपूत लखि देह
 जो जन दर्या धारि मन जरत देखि परहित
 कैसे ऐसे पुरुष के शीतलता रह चित्त ॥
 जानि सर्व गति दर्श की करै न कबहुँ पाप ॥
 सबहि चराचर जगत को देखत है वह आप
 सुनि कै दुर्जन के वचन हो रहिये चुप चाप ॥
 करै जो समता तासु की नीच कहावै आप ॥

प्रश्नोत्तर द्वितीय प्रकार

दोहा

सुरखी जगत में कौन है कहौ मोहिं समुझाय
 होय लीन भगवान में सुरखी वही जग माहं
 दुरखी कहत है कौन सों दृश सखि के बीच॥
 दरिद्र परोदय जो जरै दुरखी रहत वह नीच
 को जग में धनवान है जाको मन न डोलाय
 जो रखै संतोष मन वह धनिकन में राय ॥
 कहत दरिद्री कौन सो कहौ नोहिं करि नेह
 धन तृष्णा जाके अधिक जानु दरिद्री तेह ॥
 पुण्यवान जन होहिं जे तिन की कह पहिचान
 देखवर उर जाके हृदय पुण्यवान सो जान ॥
 पापी जन जो जगत में सो किमि जानो जाय
 जो अपने प्रभुसों विमुरख पापी वही कहाय
 बुद्धिमान नर के अबै लक्षणा कहौ बखान
 जो जन निन्दा सों डरै बुद्धिमान सो जान ॥
 सज्जन जन जग कौन से कहू निश्चय कर मोहि
 गरिब दया सब भल चहै सज्जन जानौ सोहि
 सबहि जगत जन एक से कैसे दुष्ट लखाय
 पर अकाज में जासु चित सो नर दुष्ट कहाय
 बड़ो कवन या जगत में पूछौं मैं यह बात ॥
 डरै दोष जो सबन के सो जन बड़ो कहात

दुष्टा भार्या मीत राह उतर रहलुआ देह ॥

सांघ साध घर वास करि मीचु हाथ गनि लेह

राज नीति दोहा ॥

करै न रिपुता काहु सों सब के रह तुम मीत ॥

जाते मन प्रफुलित रहै होइ न रिपु की भीत

रहौ जौन से देश में तहां के नृप की नीति ॥

देखि चलौ ता चाल को यह चतुरन की रीति

अम सुचाल के कारणौ नरलह प्रभुचित वास

ताते धन कीरति लहै पूरे पद की आस ॥ ॥

जो नृप विद्या बल बिना कियो चहै परबंध

सो पूरी आपति लहै निमि कुघाट चलअंध

पहिले लखिये दोष गुण फेरि अरंभै काज

जाते मन को होन दुख लहै न जग में लाज

ऐसे नर सों बच रहौ करै न कबहुं घात ॥

बार बार सौगन्ध रचि कहै दीन हूँ बात ॥

सुनि कै सब की बात को प्रथमहिं ढूँढौ हेत

फिरि उत्तर मुखते कहौ यहि विधि राखौ चेत

पर निन्दा करि जो तुम्हें देत बड़ाई पुर ॥

मति भूलौ यापै कहूं तुम्हें कहै गो कुर ॥

जो आपुस में बै करि मिले शौर के साथ ॥

वै भोगत हैं बहुत दुख परि बेरी के हाथ ॥

पालौ परजा पाय पद जाते जग यश होय ॥

पावो सुख परलोक में यह कहि चतुस सोय

कुंडली

प्राण पुत्र दोऊ बड़े युग चारहु परमान । सो नरेश दशरथ
तजे वचन न दीन्हो जान । वचन न दीन्हों जान बड़े न कीय
ही बड़ाई । वानि कहीं सो होय और सर्वस किन जाई । कहि
गिरिधर कवि राज भये दशरथ प्राण वाना । वचन कहे नहीं
तजे तजे सुत अरु निज प्राणा ॥

नारी अति बल के भये कुल कर होय विनाश । कौरव पांडव
वंश को कियो द्रोपदी नाश । कियो द्रोपदी नाश कैकेई दश-
रथ मारे । राम चन्द्र से पुत्र त्यऊ बनवास सिधारे । कहि
गिरिधर कवि राय सदा नर रहैं दुरवारी । सो घर सत्या ना-
श जहां है अति बल नारी ॥

याशे शायर दश भले कायर भल न पचास । शायर रा-
ण सन्मुख लैरे कायर प्राण की आस । कायर प्राण की आ-
स भागि रणाते वै आवैं । आपु हंसावहि लोग नृपति को
नाम धरावैं । कहि गिरिधर कवि राय बात चारहु युग जा-
हिर । शायर भले हैं पांच संग सौ भले न कायर ॥

तेरहु नदी न तीर तरु जो घरया वरसाय । वारि बाढ़ि
दिन चारि की अपयश जन्म न जाय । अपयश जन्म
न जाय जाय पाइन मिटि रेखा । विभव बड़ाई समय सदा

कहुं रहत न देखा । कहि गिरिधर कवि राय एक नेकी जनि
 छोड़हु । समय घटत पुनि बढ़त तीर तरु नदी न तो रहू ॥
 बड़े पात को देखि कै चढ़ो कमंडल धाय । तरु वर हो हित
 भरु सह हि रंड फटो अरण्य । रंड फटो अरण्य फूल अंत-
 हि कहुं फूला । बतियां गर्द सुरवाय और मारग में भूला । क-
 हि गिरिधर कवि राय मुनहु अन ओही अहु । वे देखहि जनि
 जाहु जहां बातन के बडु ॥

जाकी धन धरती लई ताहि न लीजे संग । जो संगै राखै बने तौ क-
 रि डारु लपंग । तौ करि डारु अपंग फेरि फरकै सोन कीजे । कपट
 फंद बत लाय तासु को मन हर लीजे । कहि गिरिधर कवि राय ख-
 टक जै है नहि ताकी । सो कछु करै उपाय हरी धन धरती जाकी ॥
 हीरा अपनी खानि को मन हीं मन पछिताय । गुण कीमति जा-
 नी नहीं तहां विकानो आय । तहां विकानो आय छेदि करि क-
 मर सो बांध्यो । बिन हरदी बिन लोन मांस ज्यों फूहरांध्यो । क-
 हि गिरिधर कवि राय धरौं कैसे मन धीरा । गुण कीमति घटि
 गर्द यही कहि रौंवे हीरा ॥

हंसा यह रहिये नहीं सर बरगये सुरवाय । जो रहिये तौ शीशपर
 बगुला देह पाय । बगुला देह पाय कीच कारे ह्वै जै हौ । लोक हं-
 सार्द होय कहा कछु बूझति पैहो । कहि गिरिधर कवि राय मोहि
 एक एही प्रोसा । याहू ते कछु घाटि और हू होई हंसा ॥

नयना जब पर वषा परे उन्नम गुण सब जांय । वे फिरि

फिरि जोरी करेंये फिरि फिरि लपटांय । ये फिरि फिरि लपटां
 य नेत्र बहुरै भरि आवैं । खान पान सुरवत्यावा रात दिन
 हीं दुरव पावैं । कहि गिरिधर कवि राय सुनहु तुम अवरा
 निनयना । लोक जोदैं अकलंक परै जब पर बस नयना ॥
 धोरखे दाड़िम के सुवा गयो नारियर खाय । खन खाई
 पाई सजा तब लाग्यो पछिताय । तब लाग्यो पछिताय चु
 दि अपनी को रोवै । निर्गुणियन के साथ बैठि अपनी गुण
 खोवै । कहि गिरिधर कवि राय घरै जै है बिन रोखे । चोच ख
 ट कै दूटि सुवा दाड़िम के धोरखे ॥

साई पुर घाला परो आस मान ते आय । पंगु अंध को छो
 डि कै पुर जन चले पराय । पुर जन चले पराय अंध एक
 मते विचारो । धरि पंगा को पीठि डीढ़ि वाकी पंगु धारो ।
 कहि गिरिधर कवि राय मते सो चलियो भाई । बिना मते
 को राज्य गर्द रावण की साई ॥

साई समोन चूकिये खेलि शत्रु सों सार । हांव परे नहिं छो
 डिये तुरत डारिये मार । तुरत डारिये मार नरद काची क
 रि दीजे । काची होइ तो होइ जीति जवा में यश लीजे । क
 हि गिरिधर कवि राय बड़े बुधि मानन गार्द । कोटिन क
 रिय उपाय शत्रु को मारिय साई ॥

साई घोड़न के अछत गदहन आयो राज । कौवा लैंके हा
 थ में छांड़ि देत हैं बाज । छांड़ि देत हैं बाज राज अज

रेसो आयो। सिंहन को करि कैद स्थार को गजहि चढायो।
कहि गिरिधर कवि गय जहां ये बुझ बड़ाई। तहां न बसिये
रयन सांक ही चलिये साईं ॥

साईं नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि। जाति नाश भा
मिलत हो मान महत की हानि। मान महत की हानि कहो
अब कैसे कीजै। जल खारी है बायो कहो अब कैसे पीजै।
कहि गिरिधर कवि गय कच्छ मच्छन सकुचाई। बड़ो फ-
जीहत चार भयो नदियन को साईं ॥

लक्ष्मणा मेघ नाद का युद्ध

भुजंगा प्रयात

खरवा मेघ नाद निजै सैन हारी। गयो स्यंदना रुढ़ व्योमै
प्रचारी। घने अस्त्र शस्त्रौष छंडे कराला। कियो मर्कटी भा-
ल सैना बिहाला। तवै लक्ष्मणो राम ब्रह्मास्त्र मारा। करै भस्म
शत्रुन पूरै सोपि भार। पुनर्वा निरी सैन देखा दुरवारी। इन्द्रय राम
चन्द्रोपि कै शोच भारी ॥

दोहा क्षीर समुद्र समीप अब मारुत सुत नुमजाउ ॥
दोहा चल औषधि सहित कपि दल लाय जिआउ
प्रभु आयसु कै लाय गिरिजिये भालु कपि वीर
पुनि पहुंचायो शैल वर क्षीर समुद्रहि तीर ॥

प्रज्ज्वलिया छंद

पुनि सिंह नाद करि भर अपार। फेंकें गढ़ पर नाना पहार

सुनि रावण विस्मय लहि नपार । बोले समस्त योधा जुभार ॥
 जो रहै भवन शत्रु न डेराय । तेहि तुरत डारिहौ मैं मराय ॥ भय
 वस्त जुरे सब समर जाय । डोलै निशान तूख बजाय । मरै वि
 भूल अस्ति शक्ति बान । शस्त्रौष अस्त्र नाना विधान । गिरित
 नख दंतन मुष्टि लात । कपि करै असुर कुल कर निपात । पग ग
 हि महि पट कै भुज उरवारि । शिर तोरि फोरि कोटिन संहारि ।
 लै कनक खंभ कोटिन कपीश । करि सकल निशाचर चमू खीश ॥
 दोहा राम लक्ष्मण कीश पति अंगद पुनि हनुमान ॥
 हते निशाचर सेन बहु को करि सकै दरवान ॥
 माघ द्वितीया आदिदे आठ दिवस राण बीच
 राम कृपा कपि दल कुशल मरे निशाचर नीच

भुजंग प्रयाण

पुन बच्च दंत मुरारि प्रबोधी । अबै बरकटी सैन मारो विरोधी ॥
 चतुर्था चमू संग योधा जुभार । रतौ कीश नै दैवतै कै प्रहारा ॥
 इहां कीश सैनाधिपौ लै पहारा । चमू राक्षसी युद्ध कै कै पछारा
 तहां वज्र दंत लखा सैन द्यारी । हते वानरा बाण दृष्टि प्रहारी ।
 तवै अड्डा दौ वृक्ष पायारा मारा । लियो छीन खड्गौ शिरो काटि द्यारा
 गिरा वज्र दंत जवै प्राण त्यागी । रही जो चमूलंक को घूमि भागी

प्रज्वलिया

सुनि वज्र दंत हति लंक नाथ । दलि दशन अधर रसि मीजि हाथ
 पठयो अकंपनै भद्र जुभार । संग शूर दीन्ह सेना अपार ॥

तेकपिन आयकारिहंर युद्ध ॥ शरशक्तिमूलअसिहतेकुद्ध
 कपियूथपलैले तरु पट्टार ॥ रजनीचरवलहति करै संहार
 गजरथ हय बाहन सकलनाशि ॥ रजनीचर भटन पट्टारि ज्ञासि
 लखि धाय अकंपन मदजुभार शरमूलनहतिसेन पविडार
 पुनिहने मानते लदै लाग ॥ शरशक्तिमूल विवि घोघत्याग
 तेहि रूपटि पठकि हृदिहने माना ॥ बधलखि अकंपन निशिर परान

भुजांगप्रधान

प्रहस्तैलरवारक्षसैशंजुभार ॥ सबै राक्षसी सैन जीतेनिकार
 पढायो महत्त गौरवात्तलंकरण ॥ चतुर्धाचमूलै लो आधगाजा
 दह्मं मर्कटी युद्ध कांक्षी अपारा ॥ शिला वृक्षलै राक्षसी सैन मारा
 उह्मं राक्षसी मूल शक्त्यासिपासै ॥ गदा पार्श्व नाराचने कीश चामै
 लखा नीलहू कीश सैना दुरवारी ॥ शिला पानिलै सो प्रहस्त प्रहणि
 प्रहस्तो महावीर वारोघभारा ॥ दहै रक्त पानौ गिरी मेरु धारा ॥
 तेवै नीलहू वृक्षलै शीश मारा ॥ गिरा सेन पै भूमि सानौ पट्टारा
 लखा प्राण त्यागा प्रहस्तै विशेषा ॥ भयात् राक्षसा भागलंकै अशेषा
 सुनालंकणजा गद सैन मारी ॥ प्रहस्तादि से सैन पाँगे हुंकारी
 हृदय दुःख के मेघ नादै बोलायो पुरे सौं पि आपे रणो गर्जि आयो
 लसै संग चौरंग सेना घनेरी ॥ जुकाऊ बजै ढोल तूरादि भेरी ॥
 दह्मं भालु कीशो शिला पाणिलै वै ॥ अकै सो महा घोर संग्राम कै कै
 सुकंठादि राजा सबै भूमि पारा ॥ रथी रावरी सर्व सेना विडारा
 पुन बंधु को देखि कै तीक्ष्ण धारा ॥ यमदंत शक्ती हृदय ताकि मारा

दोहा लक्ष्मण तेहि पाछे कियो आपु सही सो सांगि
गिरि मूर्छि महि तुरत ही महा तीव्र उरलागि
प्रज्ज्वलिया

तब तुरत दशानन दौरि आय। बहु बल करि रह लखनै उठाय।
किमि उठै भुवन सब धरे भार। श्रीरामानुज प्रोषावतार॥ ल-
खि तुरत धाय तब हनुमान। तेहि नारिलात वज्र प्रमान सहि
गिरा मूर्छि तन सुधि भुलाय। कपि गह्यो तवै लक्ष्मण उठाय॥

हरिगीति का

लखि बंधु गति राजीव नयनन नीर रह सर सादकै॥
सजितून कटि शर चाप कर शिर जटा मुकुट बनायकै
श्री राम है आसीम हनुमत गये रन सह धायकै॥
गंभीर वचन सुनाय लंके श्वर हि क्रोध बढ़ादकै॥
सुनतै दशस्य प्रहारि मारुत तीव्र शर घायल कियो
लखि सवण हनुमत कोपि रघुवर काल रुद्र दूवावियो।
शर वरिधि धरि दशानन सह सैन्य भूमि गिरा यऊ॥॥
तेहि वेगि स्पंदन घालि सारथि लंक लज्जित लायऊ

तामर

दूतराम चंद्र खरारि। रन राक्षसागन मारि॥॥
पुनि आय भ्रातहि दीख। अति कीन्ह शोच विशेष
कह पवन नंदन जाउ। दिवि औयधै सोद लाउ॥
सुनि राम बैन तुरंत। गिरिलेन रो हनुमंत॥॥

उन चारु मुख सुधि पाय। दश मौलि हूँ अकुलाय
 गढ़ काल नेमिके जाय। तेहि दीन्ह ऐसिरजाय॥
 कपि औषधै गयो लेन। तेहि रोकु छल बल केन
 तेहि भांति बहू समुझाय। नहिं राम मानुष आय॥
 हरि लीन्ह नर औतार। सोइ भंजि हैं महि भार
 तेहि वैर पूरण आइ। तेहि भजे मुख सरसाइ
 मिय दै करौ अति हेत। छमि हैं सो कृपा निरैत
 दश मौलि ताहिरि सान। शर बेगि कहू किन जान

तोमर

तब काल नेमि मन कियो तर्क। यहि हाथ मरे मोहिं होय नर्क।
 मोहिं मारै जो मारुत कुमार। हैं हैं विशेषि संसार पार॥
 अस समुझि मार्ग माया उपाय। सरविमल सलिल रचि कुटी छाव
 सह शिष्य बैठ मुनि कपट जाय। चरव मूँदि जै पै माला धिरवाय।
 तेहि पौन नंद मुनि कुटी ताक। सरविमल सलिल फल फरे पाक
 कर दूँ जाग मुनि कपट रूप। शिव पूजा जहं तहं करै अनुप।
 मुनि बंदि कहा तहं पौन पूत। भगवत हनुमत मैं राम दूत॥
 औषधि निमित्त गिरिलेन जाँउ। अयो तृपित जला प्राय मोहिं बतार
 जल आय दीन्ह के भूरि भाउ। दूत रहौ आजु फल मधुर खाउ
 जिय लखन भालु कपि कटक साथ। लखि कृपा दृष्टि रघुवंश जाय
 मैं जानत सब तपसा प्रभाउ। उठि प्रात तात प्रभु पास जाउ
 मुनि स्वल्प सलिल नहिं तया जाइ। वापी सर मोहिं दीजे बताय।

चौपाई

असुर जाय सर दीन्ह बताई ॥ चक्षु मील जल पीबहु जाई
 पुनि उपदेश देइ तोहिं भाई ॥ जीवन औषधि जिमि दर साई
 गयो मूँदि चरख पीवत पानी । मकरी गहा चरण रिम जानी
 ताहि तुरत कपि बरन बिदारा । मरतै दिव्य रूप तेइ धारा ॥
 तेइ सब कथा कपीशहि गावा । हूँतो असुर मग रेकन आवा ।
 छलिहि विलोकि पवन सुत जाई । कहते मंत्र लेव किन आई ॥
 गुरु दक्षिणा प्रथम तुम लीजै । बहुरि मंत्र उपदेशहि कीजै ॥
 अस कहि मुखि कठिन प्रहारा । युद्ध कियो तेहि निज तनु धारा
 अस्त्र शस्त्र छल बल बहु माया । करत निशाचर युद्ध निकाया
 छन महं सबै संहार कपीशा । बचे ते बाये जहां दश शीशा
 दोहा बहुरि कपीश क्षणार्द्ध मह द्रोणा चल लै दीन्ह
 ज्यायो लक्ष्मणा सैन सब युक्ति सुखेन सो कीन्ह
 हरख भेदि प्रभु पवन सुत बहु विधि गोरव दीन्ह
 जानुजहि भुज भरि भेदि पुनि निज उर शीतल कीन्ह
 अथ पत्रिका मित्र को जो पद में है
 दोहा विद्यामित्र रेणुका परशराम शिव पार्वती
 गाधि तनय भगिनी सुगुन तारुण्य पत्नी जानि
 गणेश
 तासुत बंदौ पद कमल जोरि जानु अरु पानि ॥
 लक्ष्मी विश्व कमल ब्रह्मा सरस्वती
 सिंधु सुता पति तासु सुत तासुत सुता मनाय ॥
 शंभु गौरि गुरु पद सुमिरि पत्री लिखत बनाय ।

स्वस्ति श्री सुरवमा सदन विद्या गुण पर दीन ॥

विद्वज्जन मणि कृपानिधि परम आतमा दीन ॥

चौपाई

राखि धरणि ऊपर निज भाला। करत प्रणाम हजारी लाला ॥
 कृपा दृष्टि रखियो मो ऊपर ॥ तुम पर रखे सदा धरणी धर
 दहं कुशल तब कृपा आपा। वहां रखें श्री शंभु उदार ॥
 होत जाहि सुनि परमा नंदा। यथा चकोर निहारत चंद्रा ॥
 आगे समाचार अव गावत ॥ सत्यहि द्विज वस्तुमहि सुनावत
 विरह अनल लागी चहुं धाई। तूरा वन भस्म करत समुदाई
 ज्वाला प्रोक उदत बहुताई। लपट दुःख आकाशहि जाई
 मन मृगता भीतर भयखाई। भाजि भागि चहुं ओर न जाई
 करत विचारन बनत बनावा। लख्यो उवार न काहू ठावा ॥
 श्री हरि हरण तयो अकुलाई। कहि जय जयति जयति सुरसाई
 जय देवकि सुत जय नंद नंदन। जय जय केशी कंस निकंदन।
 जय जय मोहन जय वन बारी। जय राधा वर कुंज बिहारी ॥
 दोहा जैसे गज को ग्राह सन बोरत लीन्ह बचाय ॥

द्रुपद सुता की लाज जिमि रख्यो सभा विच धाय
 तैसे ही प्रभु या समैं मेरो करौ उवार ॥ ॥

भस्म होय नहि क्षण कमहं चहुं दिशि लागि दवार
 यहि विधि व्याकुल चित्त जब कीन्ही बहुत पुकार
 दीन वचन सुनतै प्रभु तुरतै लगे गुहार ॥ ॥

प्रलय घटा सम पत्र है ताझण पहुँचे आय ॥

सुख नीर वर्षाय तिनू दीन्हो सकल बुझाय

महा वृष्टि तत झण भई उमग्यो सागर सुख

ठाढ़ बहाये मूल सह विरय करारे सुरख ॥

कौं बड़ाई कौन विधि तव पत्रन में तात ॥

भारति जिय संशय अधिक् गण पति शेष सकात

छन्द

कहिये केहि भांति बखान कौं । नहिं जात तरो सुख सागर को

मति मोरि पपील समान अहे । गुण सागर रूप उजागर को

गुण गाय लहै जग पारजु ताहि भयो कवि ऐसे हु नागर को ॥

कह लाल हजारी विचारि हिये उल चै दधि जो मुख गागरि को

छन्द

कछु यद्यपि गावत भाषि सुनावत हर्य बड़ावत है मतिके अनुसारहि

दुख को जहं सागर बुझि उजागर आगर सो तव पत्र अगस्त विचारहि

मन मोरहु तो जहं मीन समान बिनाजल व्याकुल चित्त खं भार अघारहि

तहं पत्र तुम्हार सुधा पति आय समान दियो अनि आनंद लाल हजारीहि

छन्द

चातक सम जान्यो चातक मान्यो मेरो मन यह सुरख दाई ॥

पत्री तव स्वामी अहो संघाती मुद मंगल जल वर्षाई ॥

मन मोरे भाई हे द्विज राई घटा रूप तव खन आयो ॥ ॥

कह लाल हजारी ह्वय विचारी महानंद मन उपजायो ॥

दोहा चतुर्द जो तुम लिखी सवै जानि हम लीन ॥
 होत ठंढेर ठंढेर नहिं कहूं वदलाइ प्रवीन ॥
 अधिक अहो सब बात में आप द्विजन शिर मोर
 जिन बातन में हो अधिक सोउ सुनहुं करि गोर
 कुंडलिया

शाला अहो नवीन मम डांक भवन पुनि धूर। शिशु बहु ताते
 अभित अम होत पत्र मति रूर। होत पत्र मति रूर आप लेखी
 यह भार्द। मेरो अब पुनि हाल सकल सुनिये चितु लार्द।
 कहत हजारी लाल अहो दीनन प्रति पाला। अब हीं अहो
 कृपाल नर्द मेरि हू तो शाला ॥

दोहा लड़कों केर ज माव अब सुनिये भीत सुजान ॥
 दिक् चौगुन अरु एक पुनि वर्ज रज सर जान ॥
 छोटे बालक अधिक पुनि अहैं पांच छः सात
 अब हिं जानु वर्या बिगन ऐहैं ओर हु तात ॥
 तुम्हरी कृपा प्रसाद ते अहैं हाल यह भीत ॥
 मिलत नहीं रथ्य स्त लग मुहिं अवकाश पुनीत
 यामिनि दल लौं होति पुनि वर्णन हरि हर गाथ
 सुनन आवहीं ग्राम जन नित्य नियम यह गाथ
 कुंडलिया

काहू दिन काहू समय नहिं अवकाशित भाव। ताती लहु दि
 न को बहुत लरिकन होत जमाव। लरिकन होत जमाव डांक

मंदिर पुनि दूरी । यद्वा कोशतिहि गांव आपु ड्योदे मति रूरी ।
 कहत हजारी लाल सब हि विधि तुम बड़ आहू । पर नहिं बु-
 द्धिर साल बड़े दून बातन काहू ॥ १ ॥

बाहाना तुम कीन्ह सो हम सब लीन्हो जान । अब चतुरार्द्ध
 नहिं बहुत कीजे चतुर सुजान । कीजे चतुर सुजान नहीं ऐसी
 चतुरार्द्ध । बनै बर बर माहिं बात कहू नाहिं बनाई । कहत ह-
 जारी लाल अहो गुण बुद्धि निधाना । ये हम लीन्ह तुम्हार
 बुद्धि सब ही बाहाना ॥

दोहा । तुम को मोते कछु अधिक घादि नहीं अवकाश
 निशि सगरी तातील दिन सावकाश पर काश
 ताहू पर तुम नहिं लिखत मीत कबहुं खत पत्र ॥
 करत चतुरार्द्ध पुनि अहो यह नहिं बात दक्क ॥
 अहो लिखत में पत्र किमि यद्यपि नही छुटकार
 उचित यहै तुम को लिखत कीजे इह्य विचार
 यह शिष्य मेरी मानियो सुनि लीजै दे कान ॥ ॥
 हर गिज हर गिज नहिं कियो चित अनत कहूं जान
 कारण सकल नियेध कर सुनहुं मीत यह आहि
 जान नहीं बाकी कछु शाल पुराननि मांहि ॥
 यद्यपि जानत भली विधि मोकों यहै यकीन
 कैसिह विगरी होइ पुनिलेह सुधारि प्रवीन ।
 पर मैं ताहू पर तुम्हें मनै करत सन्तान ॥

पारस निरगुण रंक घर जिमितिहि भानि बखान
 गिल्ला लिरखो जो आपने मम गुरु पत्री हाल ॥
 कारण कौन लिरख्यो नहीं सुनिये सकल कृपाल
 तव पत्री अति शीघ्र मैं लिखी लखन पुर माहिं ॥
 ताही ते संक्षेप अति वरौं चोरा नाहि ॥ ॥
 गद्य पद्य पत्री सकल दोहा छंद कवित्त ॥ ॥
 सोरठ चौपार्द कुंडलि अर्थ न गूढ़ रचित्त ॥
 जासु शिष्य तुम अस कहैं तिन के खत कीमीत
 करौं बड़ाई कौन विधि करौ सत्य पर तीत ॥ ॥
 भयो आजु लौ सो भयो अब आगे सुनि लेहु ॥
 विनय मानि निज जानि जन लिख्यो पत्र करिनेहु
 नख अरु मास मिलाय करतातर गूढ़ दिग युक्त १६३२
 संवत् आश्विन पारव सित गज तिथि सुर गुरु भुक्त ४०

अथ फुट कर काव्य कवित्त ॥

अंध महा दश कंध हरी सिय राघव को शरता उर लाग्यो
 । शक्रहि आप दयो मुनि गौतम जानि कुकर्म के कर्मनि चाल्यो ।
 शुंभ निशुंभ हूते तरुनी अरु तारहि लागि वध्यो वर
 बाल्यो । जो समझै मन मैं शठ तू किन कोन गयो परवाम
 को घाल्यो ॥

कोऊ एक पंडित महा मदन की उमंग सों जाय पहुंचे वेश्या
 के भवन में । रूप रस वाय दीन्हों वस्तु सब आपनि दीन्हों

ऐसी सुख चैन कीन्हों जैसे रमनी पुर गगन में । भोर होत
चलत बाट वेत्था हंसि पूछो बात हमें तुम्हें कबै भेट है है
ऐसी सुख चैन में । जो पै वेद पुराण ज्ञागम सब सत्य है
है तो हमें तुम्हें भेट है है कुंभी पाक भवन में ॥

चौबोलाछंद

सुरपति हित श्रीपति वामन है बलि भूपति सो छलाहि च-
ह्यो । स्वामि काज हित शुक्र दान हूं रोको दग बरु हानि सह्यो ।
सुमति होत उपकार लाख हित तो भूढो कहत न संक गह्यो ।
पर अपकार होत जानि हिन तो कबहु न सांचो बोल कह्यो ॥

हिम ऋतु वर्णन वरवाछंद ॥

हिमि ऋतु क्षिति मिति फैली जान सभाग

भानु कोन में पैठो तापत आग ॥ ॥

हिम डर भे वे परदे परदे कोस ॥ ॥ ॥

युग परदे बिच बैठे परदे पोस ॥ ॥

सीत भीत भव आवत भरि तन जोस ॥

वीर धीर धुर है गे परदे पोस ॥ ॥

निशि पति हित तक सक बड़ तज तन गात

सिसिर सीत उर दिन पुनि सकुचत जात ॥

सीत नृपति भय मान हूं नीति विचार ॥

दीत राग जल डारे कारा गार ॥ ५ ॥

भोरिन मध्य अवीर लै अहीर एकत्र है ॥

गये जहां बल बीर कहत तीर होरी हरय ॥

जेहि पद नख ते गंगानिकसी शिवशिर पै धरी

सो ब्रज बाल के संग चल्यो बाल ब्रज की तकत

कवित्त

चलो ब्रज चंद चंद बदन दुचंद करे चंद राखे भूयन अनंग अंग-
ग कवरे। कवि सरदार हेम बारी पिच कारी हाथ साथ कोर दोर्द
पै दिमाक दार दबरे। छूटै छुर कायल छबीले छैल छानी दा-
व अग्र भये जोम दार जेरी लिये जवरे। भोरिन में बोरिन
में प्रबल पिछोरिन में बांधि के अवीर भे अहीर संग
सबरे ॥

सोरठा

आवत सुने अहीर धारे चीर सुरंग वर ॥

चली राधिका तीर उमा क्षीर जासी सकल

आजुनंद को नंद पक रो गे छल छंद करि

सुचि सुखमा को कंद चंद्र चारु ब्रज को विमल

कवित्त

कवि सरदार खोट कंज के करैया कोटि कोटि चंद वोंगें जाके
आनन अमंद पै। एकै संग संग भीर भंवर भगावै गावै एकै
का अहीर धावै छवि छकि छंद पै। एक ओर ललिता

विशाखा एक ओर रंग से अर्धर की सो ताकत बुलंद पै।
 । होरी खेलिबे को चली कीरति कुमारी मानो माला मेलिबे को
 चली सीता जू सुगम पै। धन कैसी धूमक धमक धूम होलन
 की तैसे ही सुजान गान पूनो पिन पिकसो। फारसी लगा-
 र्द धारवार पिचकारी चारु चमक चलांक चंचला ज्यों चा-
 उ चिकसो। केसरि ते कलित सुसाधारधा आधा सुरव
 देरि सरदार श्याम उरवर विकसो। शोभा सुचि सरस सु-
 भाय सरसाय ससी मानौ गुरु गेह ते सनेह मानि निकसो। स्ने-
 ह की उमंग औ अनंग की तरंग चढ़ी भंग सी सुअंग कुच
 अंग में समान शैल। फरकि फरकि कान आन को दवाँ न-
 यन सरकि सरकि लई भूयन गमार गैल। ब्रज सरदार
 कीस जोर मुख कान सर्व ओरते निहार हार फूटिगे फराक
 फैल। जौ लौ सुकुमारी सारी सरकि मिहारै तौ लौ छीनि
 पिचकारी गयो छूटि कै छीलो छैल॥

सवैया

दारिद विदारिबे को प्रभु के तलास तौ हमार ह्यां अनगन
 दारिद की खानि है। अघ की सिकारी जो है नजरि तिहा-
 री तौ होतन बन पूरन अघना राख्यो टानि है। दासनिजु
 संपति सुसाहेब के काज आये होत हरयित पूरे भाग उन
 सनि है। आपनी विपति को हनूर हो करत लखि रांवरे
 को विपति विदारन की बानि है ॥ १॥

मोल ठहरावती । देख्यो दास देव दुर्लभ गति देखै महा पापि
न के पापन को लूटि ऐसी पावती । ल्यावत तर्क हूते तन जात
रूप कोउ लाको जात रूप सैल ही को साहिबी सजावती ।
संगति मे बानी करे कितेक तुम बीस्यो देवि गंगा पै न सोदा
की तरङ्ग तोहि आवती ॥ २ ॥

आभरन साजि बैठो सैंठो जनि भौहैं लखि लालन कहैं गो
प्यारी कला जैसे चंद की । सुंदरि सिंगारन बनादवे को बात मै
निलोत मा सी ठहरै हो सी है मुख कंद की ॥ दास वर आनन
उदास तामै देखि के कहैं भी कमल सो है बानी नंद नंद की ।
योही परत जाति उपमा की पंगति हो संगति अजहु तजो
मान मति मंद की ॥

चंद चतुरानन चखन के चकोरन के चंचरीक चंडीपति चित्त
चोप कारिये । चहुं चक्र चारो युग चरचा विरानी चलै दास चा
रौ फलद चपल भुज चारिये । चोप दीजे चारु चखन चित्र
चाहिबे की चेरन को चेरी चीन्ह चुक न निवारिये । चक्र धरच
कवै चिरैया के चढ़ैया चिंता चूहरी को चित्त ते चपल चूरि
दुारिये ॥ ४ ॥

सारद नारद पारद आंग सी क्षीर तरंग सी गंग की धारसी ।
शंकर शैल सी चंद्रिका फैल सी सार सरल सी हंस कुमारि
सी । मनि राम प्रकासहि मादि बिलास सी कुंद की कास-

सी मुक्ति भंडार सी । कीर्ति श्री हनुमान प्रसाद की राजति
उज्ज्वल चमेली को हार सी ॥ ५ ॥

चौपार्द

निज कृत जो मैं भाषा भाषी । सो मैं सब के आगे राखी ॥
बिगरी सबै सुधारैं सुख से । कहु कवचनन कहैं कछु मुख से
एतनी विनय हमारी मानैं ॥ अपना ते लघु हम को जानैं
मनी राम है नाम हमारा । ॥ संग्रह कीन्हों लघु विस्तार
दोहा । बट् दल बट् दल नंद भू ऊर्ज भास शनि वार
धनद त्रयोदशि अर्द्ध निशि ग्रंथ हि कियो तयार
सोरठा घर है नगर मोहान जाति मोरि भू देव है ॥
सुनिये चतुर सुजान अपना ते लघु मम गनव ३३

सम्पूर्णम्

सूचना

दस लघु ग्रंथ में जिन जिन कवियों की कविता है उन के नाम
ग्राम पठन पाठन की व्यवस्था । श्री मानू परिडन महेश दत्त
जीने अपने ग्रंथ काव्य संग्रह में सब लिखा है तिससे अध्या-
पकों को चाहिये कि कृपा पूर्वक अपने अपने विद्यार्थियों
को बतादेवें और जो जो कठिन शब्द परे हैं उन को भी काव्य
संग्रह में देख लें ॥

इति शुभम्

Bahsha Sashtra
No. 24

1

